द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी सम्मान)

'स्नेह–निर्झर बह गया है' –एक चर्चा

डॉ.अनिता मिश्र

'स्नेह–निर्झर बह गया है' कविता अणिमा में संकलित है। इसका प्रकाशन–काल 1943ई .है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जीवन के अंतिम प्रहर में निराशा में डूब गये थे। वे बार–बार अवसाद ग्रस्त हो जाया करते थे। उनके निराशा युक्त भावों की अभिव्यक्ति 'स्नेह–निर्झर बह गया है' कविता में हुई है। कवि कहता है कि उसके जीवन में स्नेह का जो झरना प्रवाहित होता था ,वह अब सूख गया है। अब जीवन में प्रेम नहीं है। प्रेम के अभाव में शरीर रेत के समान निस्सार हो गया है। अपने शरीर की अशक्तता उसे पीड़ा देती है। वह कहता है–

स्नेह निर्झर बह गया है

रेत ज्यों तन रह गया है।

वह अपने जीवन की तुलना आम की सूखी हुई डाल से करता है। आम की सूखी डाल पर कोयल और मोर आकर नहीं बैठते हैं अर्थात सूखी डाल कोयल और मोर को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाती है। वह अकेलेपन से होकर गुजरती है। आम की सूखी डाल के सदृश्य कवि के जीवन में अब कोई संगीत नहीं है। उसे किसी का साथ नहीं मिलता है। वह निरर्थक पंक्ति के समान हो गया है। वह लोगों को अपनी ओर आकर्षित नहीं करता है। अपने जीवन की निरर्थकता का एहसास उसे होता है। कवि को लगता है कि उसकी रचना–क्षमता का विनाश हो गया है। उसका जीवन पीड़ा की अग्नि में जलता रहता है। कवि कहता है–

आम की यह डाल जो सूखी दिखी,

कह रही है –''अब यहाँ पिक या शिखी

नहीं आते पंक्ति मैं वह हूँ लिखी

नहीं जिसका अर्थ–''

जीवन दह गया है।

कवि निराला ने जगत को अपनी उत्कृष्ट रचनाओं को प्रदान किया है। उसने अपनी प्रतिभा और बौद्धिकता से लोगों को प्रभावित किया है। कवि को एहसास है कि अतीत का वह समय अनश्वर है। उसके जीवन से उन सुखद क्षणों को कभी मिटाया नहीं जा सकता है। समाज से प्राप्त सम्मान को याद करके वह दुःखी होता है क्योंकि वर्तमान में वह उससे वंचित है। उसके जीवन में जो ठाठ था, वैभव था वह खत्म हो गया है। कवि कहता है–

दिये हैं मैंने जगत को फूल–फल,

किया है अपनी प्रभा से चकित–चल;

पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल–

ठाठ जीवन का वही ,

जो ढह गया है।

कवि निराला कहते हैं कि नदी के किनारे उनसे मिलने के लिए अब कोई प्रेमिका नहीं आती है। रचना–सृजन के लिए कोई प्रेरणा निकट नहीं आती। प्रेम से वंचित कवि के हृदय में अमावस्या का गहन अंधकार व्याप्त रहता है। उसे लगता है कि वह समाज द्वारा उपेक्षित कर दिया गया है–

अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा,

श्याम तृण पर बैठने को, निरुपमा।

बह रही है हृदय पर केवल अमा;

मैं अलक्षित हूः यही

कवि कह गया है।

वस्तुतः 'स्नेह निर्झर बह गया है' कविता में कवि की निराशा ही अभिव्यक्त हुई है।

कवि निराला ने 'स्नेह–निर्झर बह गया है' कविता में मुक्त छंद का प्रयोग किया है। 'फूल–फल','चकित–चल','पल्लवित–पल' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है।